विद्या - भवन बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

वर्ग - प्रथम विषय - हिंदी

एन.सी.ई.आर.टी पर आधारित

दिनांक - 11 - 09- 2021

पाठ - 13

वह अनोखी सवारी

सुप्रभात बच्चों ,

आज की कक्षा में आपको वाहनों की सवारी कहानी के बारे में अध्ययन करना है जो इस प्रकार है-

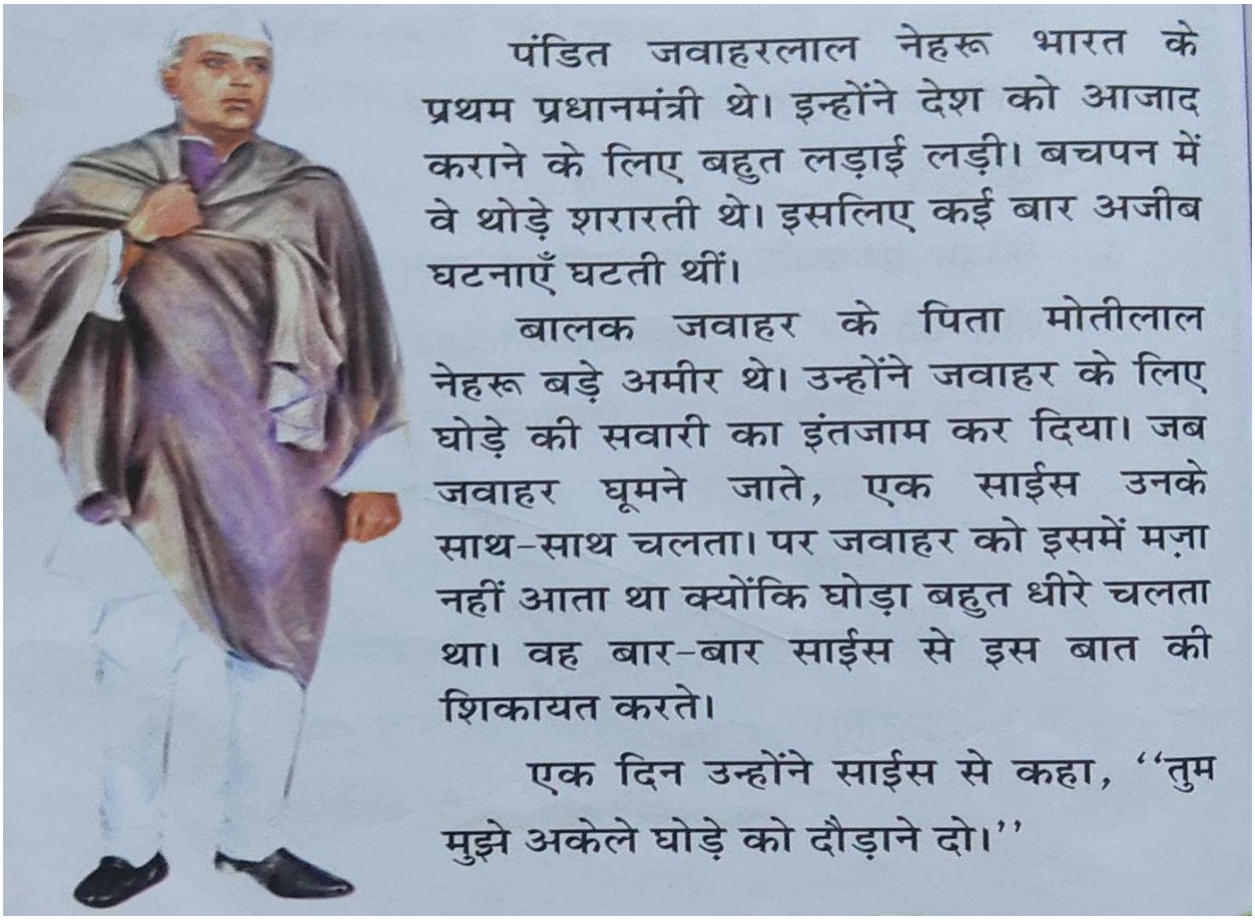

पंडित जवाहरलाल नेहरू भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे। इन्होंने देश को आजाद कराने के लिए बहुत लड़ाई लड़ी। बचपन में वे थोड़े शरारती थे। इसलिए कई बार अजीब घटनाएँ घटती थीं।

बालक जवाहर के पिता मोतीलाल नेहरू बड़े अमीर थे। उन्होंने जवाहर के लिए घोड़े की सवारी का इंतजाम कर दिया। जब जवाहर घूमने जाते, एक साईस उनके साथ-साथ चलता। पर जवाहर को इसमें मज़ा नहीं आता था क्योंकि घोड़ा बहुत धीरे चलता था। वह बार-बार साईस से इस बात की शिकायत करते।

एक दिन उन्होंने साईस से कहा, ''तुम मुझे अकेले घोड़े को दौड़ाने दो।''

साईस इसके लिए तैयार नहीं हुआ। उसे डर था कि बालक घोड़े से गिर जाएगा। पर जवाहर को इसकी बिलकुल चिंता न थी। उनके बार-बार कहने पर आखिर साईस कुछ दूर हट गया। अब जवाहर ने जोर से घोड़े को दौड़ाना शुरू किया।

घोड़ा कुछ देर तो दौड़ा, फिर उसने जवाहर को नीचे गिरा दिया और वापस घर की ओर दौड़ पड़ा।

जवाहर के पिता मोतीलाल नेहरू ने जब घोड़े को खाली वापस आते देखा, तो वे घबरा गए।

पर इतने में ही पीछे-पीछे बालक जवाहर भी दौड़ता हुआ आ गया। बोला, "पिता जी, मैं घोड़े को दौड़ा रहा था। इसने मुझे गिरा दिया। लेकिन मैं घबराया नहीं। थोड़ी-सी चोट लगी है। पर देखिए, मैं दौड़ा-दौड़ा आ गया और घोड़े के साथ ही पहुँच गया। अब मैं फिर से इसे दौड़ाऊँगा।"

मोतीलाल नेहरू ने सुना, तो मुसकराए। उन्होंने अपने बेटे को शाबासी दी। बोले, "तुम सचमुच बहादुर हो। आज मैं समझ गया, बड़े होकर तुम बड़े-बड़े काम करोगे।"

जवाहरलाल नेहरू इस बात को कभी नहीं भूले।

-डॉ० सुनीता

गृहकार्य :-

दिए , गए अध्ययन सामग्री को पूरे मनोयोग से पढ़ें तथा समझने का प्रयास करें–

****

ज्योति